भारत की आत्मा के संरक्षण के लिए गाय की नस्ल की रक्षा करें।
कृषि कुंभ (जुलाई 2023),
खण्ड 03 भाग 02, पृष्ठ संख्या 162–163

भारत की आत्मा के संरक्षण के लिए गाय की नस्ल की रक्षा करें।

राजकुमार सोनी[1], राजेंद्र कुमार सोनी[2], मीठा लाल मीना[3] एवं वीरेन्द्र सिंह[4]
एम.एससी[1,2] और रिसर्च स्कॉलर[3,4]
पशुपालन और डेयरी विज्ञान विभाग[1,2,3] और सस्य विज्ञान[4]
राजा बलवंत सिंह महाविद्यालय, बिचपुरी, आगरा–283105 (उ.प्र.), भारत।
Email Id: 25rajkumar1999@gmail.com

परिचय

मुख्य रूप से कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के रूप में, गायें प्राचीन काल से लेकर अब तक हमेशा हमारे जीवन के केंद्र में रही हैं। आयुर्वेद शुद्ध स्वदेशी गाय के दूध और दूध उत्पादों के सात्विक गुणों को बढ़ाता है। हालाँकि, बदलते समय के साथ, उदासीनता और गलत सूचना के कारण, हम अपनी देशी गायों की नस्ल के प्रति काफी हद तक उपेक्षित रहे हैं। देशी नस्लों की कमी के कारणों में विदेशी नस्लों के साथ संकरण, आर्थिक रूप से कम व्यवहार्य, उपयोगिता में कमी, झुंड के आकार में कमी और कृषि संचालन का बड़े पैमाने पर मशीनीकरण शामिल हैं। भविष्य में आनुवंशिक बीमा, वैज्ञानिक अध्ययन, हमारे पारिस्थितिकी तंत्र के एक हिस्से के रूप में, सांस्कृतिक और नैतिक आवश्यकताओं और भविष्य में ऊर्जा स्रोतों के लिए देशी नस्लों को संरक्षित करने की आवश्यकता है।

वर्तमान दृश्य

भारत में मवेशियों की 120 से अधिक देशी नस्लों में से केवल 37 मौजूद हैं, बाकी विलुप्त हो गई हैं। यह महत्वपूर्ण है कि शेष को संरक्षित किया जाए। देशी गाय की नस्लें वास्तव में अच्छी गुणवत्ता वाले दूध का सशक्त स्रोत हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान ने साबित कर दिया है कि इन गायों के दूध को। 2 दूध कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि यह आपको कोरोनरी रोग से सुरक्षित रखता है और लैक्टोज असहिष्णुता के कारण को खत्म करता है। यह दूध पचाने में आसान होता है क्योंकि इसमें वह प्रोटीन नहीं होता जो। 1 दूध में पाया जाता है। माना जाता है कि 1 दूध में ओपियेट जैसे प्रभाव होते हैं जिससे हल्की से लेकर गंभीर चिकित्सीय स्थितियाँ विकसित हो सकती हैं। दुर्भाग्य से गायें शहरों में उपेक्षा का शिकार हैं, जहाँ उन्हें जीवित रहने के लिए कचरे पर निर्भर रहना पड़ता है। कई बार पॉलिथीन के काले खतरे के कारण उनकी मौत हो जाती है।

विदेशी नस्लों की तुलना में स्थानीय नस्लों में निम्नलिखित गुण हैं:

1. विदेशी नस्लों की तुलना में बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता
2. कम इनपुट प्रबंधन प्रणाली के लिए अधिक उपयुक्त
3. स्थानीय वातावरण में बेहतर जीवनयापन करें
4. ड्राफ्ट कार्य के लिए उपयुक्त

संरक्षण रणनीतियाँ

1.प्रजनन नीति

राज्य अपनी संबंधित प्रजनन नीति की समीक्षा कर सकते हैं ताकि उनके प्रजनन पथ में स्वदेशी नस्लों के संरक्षण को प्राथमिकता दी जा सके और महत्वपूर्ण और मान्यता प्राप्त स्वदेशी नस्लों के घरेलू पथ में मान्यता प्राप्त स्वदेशी मवेशियों के क्रॉस ब्रीडिंग की अनुमति न दी जा सके।

2. प्रजनन कार्यक्रम का कार्यान्वयन

राज्य संरक्षण कार्यक्रम को लागू करने के लिए क्षेत्र विशिष्ट और नस्ल विशिष्ट प्रजनन रणनीतियों, कार्यक्रमों और योजनाओं पर विचार कर

सकता है। राज्य अपनी–अपनी प्रजनन नीतियों में, उन क्षेत्रों की भौगोलिक सीमाओं को चित्रित और पहचान सकते हैं, जहां गैर–वर्णनात्मक मवेशियों को स्वदेशी नस्लों के बैलों के साथ पार करके उन्नत किया जाना चाहिए। एक बार ऐसे क्षेत्र चिन्हित हो जाने के बाद, देशी नस्ल के बैलों के अलावा गैर–वर्णनात्मक मवेशियों की क्रॉस–ब्रीडिंग की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

3. ब्रीडर्स संगठन को बढ़ावा देना

प्रजनन फार्म

देशी नस्लों के मौजूदा राज्यों के प्रजनन फार्मों को जर्मप्लाज्म भंडार के रूप में घोषित किया जाना चाहिए और बैलों के उत्पादन के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। इन फार्मों पर केवल शुद्ध प्रजनन का अभ्यास किया जाना चाहिए।

गौशाला

बड़ी संख्या में गौशालाओं में देशी नस्ल के शुद्ध जानवरों की काफी बड़ी आबादी है, लेकिन इन जानवरों के रखरखाव और सुधार के लिए उनके पास संसाधन नहीं हैं। ऐसी गौशाला को स्वदेशी नस्लों को बनाए रखने के लिए समर्थन दिया जा सकता है ताकि वे प्रजनन के लिए बेहतर गुणवत्ता वाले जर्मप्लाज्म की आपूर्ति कर सकें।

4. स्वैच्छिक संगठन की भूमिका

ब्रीडर्स एसोसिएशन के सहयोग से उनकी नस्ल के प्रकार के अनुरूप उत्कृष्ट जानवरों के चयन के माध्यम से स्वदेशी नस्लों में सुधार किया जा सकता है। इन ब्रीडर्स एसोसिएशन को संबंधित स्वदेशी नस्लों के संरक्षण और विकास से संबंधित मुद्दों को उठाने के लिए राज्य/जिला स्तर पर एक फेडरेशन बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

5. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग

जहां भी आवश्यक हो उचित मूल्यांकन के बाद कृत्रिम गर्भाधान, जमे हुए वीर्य उत्पादन, संतान परीक्षण, भ्रूण स्थानांतरण तकनीक जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय जीन बैंक को वीर्य और भ्रूण के रूप में जर्मप्लाज्म को बनाए रखना चाहिए। क्षेत्रीय जीन बैंकों को राष्ट्रीय जीन बैंक की आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए।

6. डेटा बेस

स्वदेशी नस्लों के सभी विवरणों के संबंध में एक विश्वसनीय डेटा बेस विकसित किया जाना चाहिए, जिसमें उनके प्रजनन पथ, संख्या, लक्षण वर्णन, जीन संरचना, संस्थागत फार्म जहां उन्हें संरक्षित और संरक्षित किया जा रहा है। इस उद्देश्य के लिए एनडीडीबी द्वारा विकसित मवेशियों और भैंसों के लिए राष्ट्रीय स्तर के डेटा बेस का उपयोग किया जा सकता है।

7. जन जागरूकता का सृजन

विभिन्न नस्लों पर उपलब्ध जानकारी को पैम्फलेट, किताबों, कैलेंडर आदि के रूप में प्रकाशित किया जाना चाहिए। इससे जागरूकता पैदा होगी और किसानों को महत्वपूर्ण नस्लों के संरक्षण के लिए प्रेरित किया जाएगा। स्थानीय नस्लों के लिए ब्रीड शो की व्यवस्था की जानी चाहिए और शुद्ध स्थानीय नस्लों को बनाए रखने के लिए मालिकों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए। स्थानीय नस्ल संरक्षण और नवीन उपयोग पर सफलता की कहानियाँ प्रकाशित करें।

निष्कर्ष

यद्यपि स्वदेशी मवेशियों की नस्लें उनकी उत्पादन प्रणाली के लिए सबसे उपयुक्त हैं, लेकिन समग्र रूप से, इन देशी नस्लों और आबादी के वित्तीय मूल्य का उचित मूल्यांकन नहीं किया गया है। खतरे में पड़ी स्वदेशी मवेशियों की नस्लों के लिए एक राष्ट्रीय निगरानी सूची तैयार की जानी चाहिए और जिनके संरक्षण की आवश्यकता है, उन्हें संरक्षण कार्यक्रमों में प्रजनकों, समुदायों, गौशालाओं, गैर सरकारी संगठनों और अन्य संबंधित हितधारकों को शामिल करके भागीदारी दृष्टिकोण अपनाकर मूल निवास स्थान में संरक्षित किया जाना चाहिए। इसके अलावा, चयनात्मक प्रजनन या उन्नयन के माध्यम से उत्पादकता बढ़ाने से स्वदेशी मवेशियों की नस्लों की आबादी और उनकी स्थायी उपयोगिता में गिरावट के रुझान को रोकने में मदद मिलेगी।